वैदिक वाङ्मय में 'विष्णु' का स्वरुप

सन्तोष कुमार पाण्डेय

वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत सर्वप्रथम 'ऋग्वेद' में वर्णित विष्णु का स्थान द्युस्थानीय अर्थात् आकाश में रहने वाले देवताओं में सर्वश्रेष्ठ है। यास्कानुसार रश्मियों के द्वारा सारे संसार को व्याप्त करने के कारण सूर्य 'विष्णु' के नाम से अभिहित हैं। वैदिक संहिताओं में सबसे महत्त्वपूर्ण घटना, उनका तीन डगों–पाद–विक्षेपों के द्वारा सम्पूर्ण जगत् को माप लेना है। विष्णु के इस माहात्म्य का उद्बोधक यह मंत्र नितान्त प्रसिद्ध है जो प्रत्येक संहिता में उपलब्ध होता हैं।